विस्तार पत्रक भा.कृ.अनु.प./रा.उ.अ.के/2019/02

भाकृअनुप
ICAR

ऊँटों में पाईका रोग

राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
NRCC

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर, 334001 (राजस्थान)

ऊँटों में पाईका रोगः असामान्य एवं विकृत भूख की समस्या

ऊँटों में पाईका रोग यानि विकृत भूख, पोषण की एक असामान्य और अजीब स्थिति है, जिसमें ऊँट प्राकृतिक भोजन को छोड़कर लगातार ऐसी वस्तुएँ खाते हैं, जिसका कोई पोषण मूल्य नहीं होता जैसे कि मिट्टी, पत्थर, ईंट, हड्डियाँ इत्यादि। प्रभावित पशु हर उस वस्तु को चाटना शुरू कर देते हैं जिसके वो संपर्क में आते हैं। यह रोग गाय, भैंस, भेड़, बकरी आदि में भी हो सकता है।

दीवार को खाता ऊँट

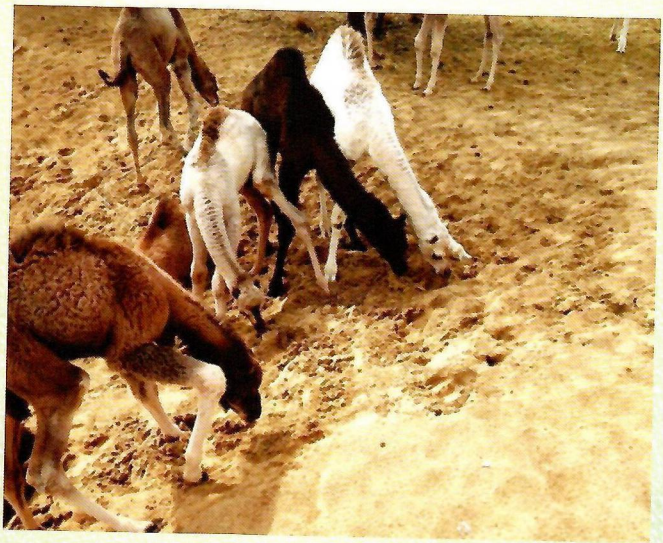

मिट्टी खाते ऊँट के बछड़े

हड्डी चबाते ऊँट

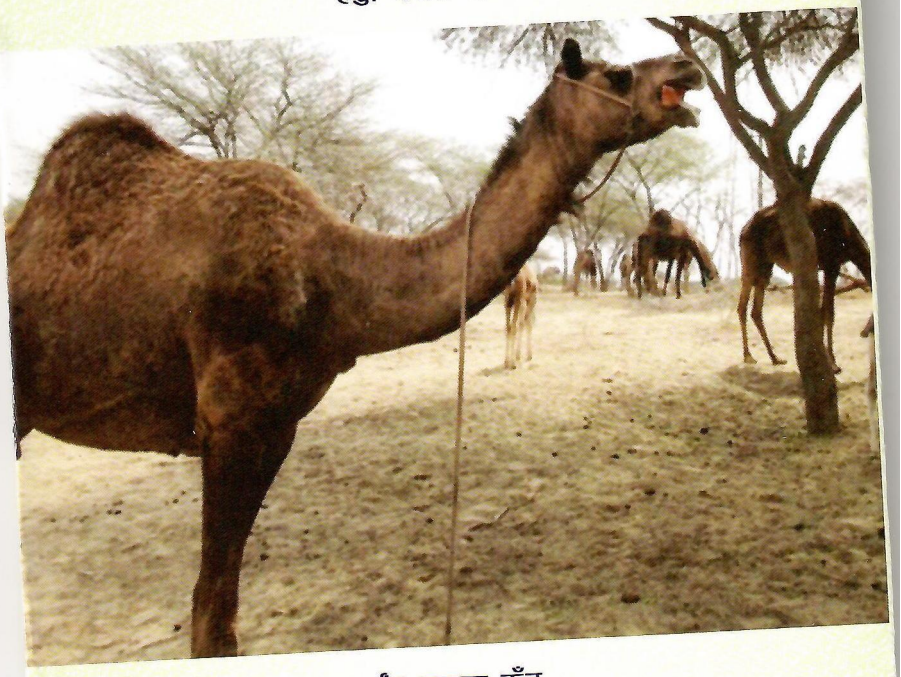

ईंट चबाता ऊँट

कारण : पाईका कई कारणों से होता है। पाईका के कारणों को अभी पूर्ण रूप से समझा नहीं जा सका है। कुछ ज्ञात कारण इस प्रकार है :

1. यह पशु के पेट में कीड़े (आँत कृमि) के कारण होता है। यह कृमि पशु का खून चूसते रहते हैं जिससे पशु में खून की कमी के साथ–साथ खनिज लवणों की भी कमी हो जाती है। ग्रसित पशु इस कमी को पूरा करने के लिए विभिन प्रकार की वस्तुओं को चाटना/चबाना/खाना शुरू कर देते हैं, जो कि बाद में पशु की आदत बन जाती है।

2. यह अपच और आहार जनित त्रुटियों के कारण से भी होता है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार पाईका, आहार में फॉस्फोरस, सोडियम, पोटेशियम, ऊर्जा और प्रोटीन की कमी से भी हो सकता है।

3. इस बात पर भी जोर दिया गया है कि पाईका शायद तंत्रिका तंत्र (नर्वस) की गड़बड़ी के कारण पोषण के साथ हस्तक्षेप करने के कारण होता है।

4. यह भी तथ्य सामने आया है कि भेड़ों में गंजापन और ऊन खाने की आदत, भोजन में सूक्ष्म तत्व विशेष रूप से तांबा, जस्ता और कोबाल्ट की कमी के कारण हो सकता है।

5. यह पशुओं में उदासी का एक प्रतिबिम्ब भी हो सकता है, क्योंकि अकेले रखे गए पशुओं में यह प्रवृति समूह में रखे गए पशुओं की तुलना में अधिक होती है।

6. दुधारू भैंसों में पाईका लक्षणहीन किटोसिस का एक संकेत भी हो सकता है।

7. कुछ मामलों में यह सीसा विषाक्तता, रेबीज और कुछ चयापचय रोगों की वजह से मस्तिष्क संबंधी विकार के कारण होता है।

8. शहरी मवेशियों में कम चारे के साथ, यह अधिकतर खनिज लवणों की कमी के कारण होता है। कुपोषित पशु शहरी कचरा जिसमें काफी प्लास्टिक की वस्तुएँ होती है, को चबा जाते हैं। ऐसे पशुओं में पेट बंद की समस्या हो जाती है व पशु की मृत्यु भी हो जाती है।

9. सूखे अथवा अकाल की स्थिति में ऊँटों के लिए जब पर्याप्त मात्रा में चरने के लिए नहीं होता तो इन्हें जंगल में विचरने के लिए खुला छोड़ दिया जाता है ताकि मरूस्थल में जो भी वनस्पति हो उसका सेवन कर यह पशु अपना निर्वाह कर सके। लेकिन पर्याप्त वनस्पति न होने के कारण पशु कई तरह की अखाद्य वस्तुएँ जैसे कि हड्डी, पत्थर, कंकर, कपड़ा, पॉलीथिन इत्यादि को खाने लगते हैं। कई बार ऐसी हड्डियों में कुछ विषैले जीवाणु जैसे कि बोटुलिजम वगैरह पनपते रहते हैं जो कि पशु में बीमारी व मौत का कारण बनते हैं।

लक्षण : जब पशु को पहली बार देखा जाता है कि इसके पोषण की स्थिति अच्छी है, लेकिन शीघ्र ही उसकी शारीरिक स्थिति गिरनी शुरू हो जाती है।

ग्रसित पशु कुछ हद तक बेचैन, असहज और उदास हो जाता है। रोगी पशु किसी भी समय असमान्य अखाद्य पदार्थो को खाना शुरू कर देता है। इसमें वह अपने खूंटों, पेड़ों की छाल, रस्सी आदि को दांतों–जीभ से काटता व चाटता है। इसके अतिरिक्त मिट्टी, ईंट, पत्थर, बजरी, पैन्ट, गोबर, चूना, हड्डी आदि को भी खाता व चबाता है। इसके कारण पशु धीरे–धीरे दुबला–पतला व कमजोर होने लगता है। कमजोरी की स्थिति में ऊँट का कूबड़ धीरे–धीरे कम होकर समाप्त हो जाता है। पशु में कभी कभी अनियमित जुगाली, पेट में गैस आदि से अपच के लक्षण भी दिखाई पडते है। कभी–कभी पशु में दस्त व कब्ज आदि भी हो जाती है। बाद में पशु में एनीमिया (पीली श्लेष्मा झिल्लियाँ) होने के साथ–साथ त्वचा खुरदरी व कठोर हो जाती है। अगर पशु के इलाज में देरी होती है तो एक निश्चित अवधि के बाद, कुपोषण और थकावट से भी पशु की मृत्यु हो सकती है।

प्रभाव : खनिज लवणों की कमी इसका एक मुख्य कारण होता है।

- प्रभावित पशुओं की भूख विकृति के साथ–साथ उत्पादन क्षमता में कमी आ जाती है। दुधारू पशुओं की उत्पादन क्षमता में स्पष्ट रूप से कमी आंकी जा सकती है।
- युवा पशुओं में शारीरिक वृद्धि और विकास कम हो जाता है।
- स्वस्थ पशु दुर्बल व क्षीण हो जाते हैं व प्रजनन क्षमता में कमी आ जाती है।
- विकृत भूख के पश्चात पशु अस्थिमृदुता की स्थिति में आता है तब उसकी हड्डियाँ भंगुर और आसानी से खंडित होने वाली हो जाती हैं।
- अखाद्य पदार्थो के माध्यम से पशु में आँत कृमि का प्रकोप हो जाता है।
- पशुओं द्वारा चबाए जाने वाली हड्डियाँ क्लॉस्ट्रीडियम बोटुलिजम जीवाणुओं से प्रभावित हो सकती है, जिसको सेवन करने से पशु की तुरंत मृत्यु हो जाती है।

निदान एवं उपचार

(1). अगर पशु में आँत कृमि हो गए हैं तो पशु की गोबर जाँच से इसका पता लगा कर कृमि नाशक दवा से उपचार करना चाहिए, इसके बाद खनिज लवणों की हुई कमी को पूरा करने के लिए पशु को रोजाना आहार में खनिज लवण (मिनरल मिक्सचर) खिलाना चाहिए।

(2). खून की जाँच कर यह पता लगाया जा सकता है कि किस विशेष लवण की कमी हो गई है, उस लवण को विशेष रूप से खिलाया जा सकता है।

(3). राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर द्वारा किये गये एक अध्ययन से पता चला है कि पाईका ग्रसित ऊँटों में कैल्शियम व फॉस्फोरस की कमी पाई गई, इन ऊँटो को इलाज के लिए खनिज लवण (मिनरल मिक्सचर), 50 ग्राम प्रति दिन प्रति ऊँट खिलाना उचित पाया गया जिससे यह ऊँट स्वस्थ हो गए।

(4). जहाँ तक हो सके पशुओं को बाड़े में अकेला न रखें।

(5). दुधारू भैंसों में रोग होने पर किटोसिस की भी जाँच अवश्य करवा कर उपचार करे।

(6). भैड़ो में यह रोग होने पर चारे व खून में सूक्ष्म लवणों की मात्रा जाँच कर उपचार किया जा सकता है।

(7). चारागाह में चरने वाले पशुओं के लिए चारागाह बदलना फायदेमंद हो सकता है। जिससे भिन्न–भिन्न वनस्पतियों के सेवन से कुछ लवणों की कमी पूरी हो सकती है।

लेखक गण

एफ.सी. टूटेजा, एस.डी. नारनवरे एवं आर.के. सावल

प्रकाशक

संस्थान तकनीकी प्रबंधन इकाई

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र

पोस्ट बैग 07, जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर-334001 (राजस्थान)

दूरभाषः 0151-2230183, फैक्सः 0151-2970153

ई-मेल : nrccamel@nic.in, वेबसाईट : www.nrccamel@icar.gov.in